* ॐ *

श्री भक्ति-पद्य-रसायन

(संङ्गीत के अपूर्व भजनों का सम्मिलन)

पद्यकर्त्ता

साधु मोडाराम वैष्णव

श्री भक्त्आश्रम गढड़ा (बाड़मेर)

संशोधनकर्ता

सन्त रामप्रकाशाचार्य

जोधपुर

※ श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः ※

श्री भक्ति-पद्य-रसायन

※ रचयिता ※

श्री तपोशील, वयोवृद्ध, वैष्णव भक्तिनिष्ठ,

साधु मोडाराम (मुनिदास) जी महाराज

श्री हरिहर भक्त कुटी, गढड़ा-टंकी (बाड़मेर)

※ सम्पादक ※

नशाखण्डनदर्पणादि दर्जनाधिक्य काव्यशास्त्रों के निर्माता एवं प्रकाशक

कविभूषण वि० सन्त रामप्रकाशाचार्यजी वैष्णव विद्यावाचस्पति

श्री उत्तम आश्रम, कागारोड़, जोधपुर

※ प्रकाशक ※

श्री सतसंग शिष्य मण्डली, श्रीभक्त आश्रम, गढड़ा-टंकी

[माघ श्री वसन्त पञ्चमी के पावन उपलक्ष में प्रसारित]

संवत् २०१६ } प्रथमावृति { प्रचारार्थ

शकाब्द १८८४ } सन् १९६३ { ५० नये पैसे

दो शब्द

मुकं करोति वाचालं, पंगु लङ्घयते गिरिम् ॥
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम् ॥ १ ॥

प्रस्तुत पुस्तिका में सर्वेश्वर विष्णु भगवान के चार नटवर श्री विग्रह नाम, रूप, गुण, लीला संकीर्तन का पद्यों में अति रोचक भाव वर्णन हुआ है, जो प्रत्येक मानव मात्र को हार्दिकता से धारण करके अपने जीवन का पारमार्थिक लाभ ग्रहण करने में सहायक है।

श्री साधु मोडारामजी महोदय मेरे आत्मीय परम मित्र है। आपका जीवन निश्छल "सादा जीवन उच्च विचार" मय एकान्त वासिक साधु रूप से ही परम शन्तोषी, परिश्रमी रहा है।

आप वयोवृद्धावस्था में भी शारीरिक शक्तयानुसार पुर्ण पुरूषार्थ करते रहते है। जहां भी बैठते हैं वहाँ हरि भक्ति के पद्यों मय संतवाणी संगीत प्रियता की ज्ञान, वैराग्य, नीति गङ्गा का निर्मल वाग्धारा प्रवाह बहा देते हैं, श्रोताओं में आनन्दातिरेक प्रेमाश्रु मग्न धारा का वहन करना स्वाभाविक गुण एक ईश्वरीय देन है।

आपकी निष्ठा "ईश्वर भक्ति तथा मानव जीवन में शुद्ध चरित्र निर्माण" कर्तव्य करने में मुख्य है, यह गुण आप में केवल व्यक्तिगत ही नहीं है अपितु गुरु परम्परागत से ही प्रसारित होते आये हैं।

आपकी गुरु प्रणालिका का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है—

१. योगेश्वराचार्य १०८ सर्व श्री सौम्यमूर्ति पूज्यपाद हरिरामजी महाराज।

२. ब्रह्मवेता आचार्य श्री स्वामी जीयारामजी महाराज।

३. श्री सुखरामजी महाराज
४. श्री अचलरामजी महाराज
५. श्री उत्तमरामजी महाराज
६. वि० संतरामप्रकाशाचार्य वैष्णव (नैष्ठिक ब्रह्मचारी)

३. श्री बनानाथजी महाराज
४. श्री नवलनाथजी महाराज
५. श्री मंगलनाथजी महाराज
६. श्री सुखरामजी (वानप्रस्थ)
७. श्री ठारूरामजी (वानप्रस्थी)
८. श्री साधु मोडारामजी महाराज

आशा है पाठक गण भक्ति वाणी का मनोभाविक समादर करके लाभ उठायेंगे ही शेष रही स्वाभाविक वर्णाक्षर त्रूटी को क्षमस्व करके सम्पादक-प्रकाशक को अनुगृहित करें।

श्री उत्तमआश्रम
कागारोड़ जोधपुर
दि० १२-१२-६२ ई०

निर्मत्सराणां सतामनुचरः
संत रामप्रकाशाचार्य वैष्णव विद्यावाचस्पति
नैष्ठिक ब्रह्मचारी (वर्मा)

मङ्गलं भगवान विष्णुः मङ्गलं गरुड़ध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्ष मङ्गलायतनो श्री हरिः ॥१॥
मङ्गलं लेखकानां पाठकानां च मंगलम्।
मंगलं सर्व लोकानां भूयो भूयोऽस्तु मङ्गलम् ॥२॥

विषयानुक्रमणिका (सूची)

श्री साधु मोडारामजी (मुनीदासजी)
उपनाम - मोहनरामजी महाराज

हरिकीर्तन कीजिये, तज ममता मद काम ।
"मोहनराम" मन मोत्त हो, पाय अटल विश्राम ॥१॥

भक्त कुटी, गढड़ा-टंकी (बाड़मेर-राजस्थान)

श्री ईश्वर मंगलाचरणम्

शान्ताकारं भुजङ्ग शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वा धारं गगन सदृशं मेघ वर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्व लोकैक नाथम् ॥१॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥२॥

(एक श्लोकी श्री रामायण)

आदौ राम तपो वनादि गमनं, हत्वा मृग काञ्चनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं, सुग्रीव संभाषणम् ॥
बालि निग्रहणं समुद्र तरणं, लंका पुरी दाहनम् ।
पश्चात् रावण कुम्भकरण हननं, एतद्धि रामायणम् ॥३॥

(एक श्लोकी श्री मद्भागवत)

आदौ देवकी देव गर्भ जननं, गोपी गृहे वर्धनम् ।
माया पूतनं जीवि ताप हरणं, गोवर्धनो च धारणम् ॥
कंशच्छेदनं कौरवादि हननं, कुन्ती सुता च पालनम् ।
एतद्धि भागवत् पुराण कथनं, श्री कृष्णलीलाऽमृतम् ॥४॥

(ब्रह्म गायत्री जप)

ॐ भूः र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धीयो योनः प्रचोदयात् (यजु० अ०३६ मं०३)

संक्षिप्त (अष्टादश नाम) गीता पाठ

गीता नामानि वक्ष्यामि गुह्यानि शृणु पाण्डवः ।
कीर्तनात् सर्व पापानि विलयं याति तत्क्षणात् ॥६॥
गंगा, गीता च, गायत्री, सीता, सत्या, सरस्वती ।
ब्रह्मविद्या, ब्रह्मवलि, त्रिसन्ध्या, मुक्तगहनी ॥
अर्ध मात्रा, चिदानन्दा, भवघ्नी, भय नाशनी ।
वेदत्रयी, पऽन्नता, तत्वार्थ, ज्ञानमञ्जरी ॥७॥
इत्येतानि जपे नित्यं नरो निश्चल मानसः ।
ज्ञान सिद्धिं लभेच्छीघ्रं तथान्ते परमं पदम् ॥८॥

* दोहा *

गंगा गीता गायत्री, तुलसी सीताराम ।
पांच नाम कलि अघहरण, सुमरे द्रवहि राम ॥१॥
ओ३मकार अद्वितीय अक्षर, अविनाशी ब्रह्मराम ।
इसी नाम का जप करे, पाय परम सुख धाम ॥२॥

* श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः *

श्री भक्ति पद्य रसायन

साधु श्री स्वर्गीय सुखरामजी (वानप्रस्थी) कृत

भजन (१) राग आशावरी पद

साधो भाई ! निर्गुण का गुण न्यारा ।
सतगुरू सार शब्द सत मानो, हंस उतरे भव पारा ।।टेर।।
एक रूप का सकल पसारा, विष अमृत दो धारा ।
मीठा हंस हरि का प्यारा, खारा सकल संसारा ।।१।।
सात द्वीप नव खण्ड ब्रह्मण्डा, पाँच पुरूष विस्तारा ।
निर्गुण रूप निरत से निरख्यो, अपरम् रूप अपारा ।।२।।
शिव ब्रह्मा मुनि तप धारी, उन सिमरचा ओमकारा ।
शब्द कला सकल घट खेले, रोम रोम रणुंकारा ।।३।।
"मंगलनाथ" गुरू मुक्तिदाता, चाकर रहूँ तुम्हारा ।
"सुखराम" शरणनिज गुरू की, मिटिया भर्म हमारा ।।४।।

भजन (२) राग – आशावरी पद

संतो गुरू गम महिमा गाई ।
दाता दया करी गुरू स्वामी, सब सुख ब्रह्मलो भाई ।।टेर।।
प्यासा बिना पीयो निज पिवना, निज बिन समझ न थाई ।
सुरत निरत चित चेतन भईया, वस्तु अमोलख पाई ।।१।।

पंख बिना इक पक्षी पाया, नैण बैण कछु नांई।
आठो पहर चौसठ श्री घड़ीयां, उड़त गगन दिश जाई ॥२॥
सोवत ध्यान सोवण नहीं देवे, जग सूँ हेतु ढाई।
पांच पचीस लीया मुख आगिल, जब चढ गगन सिधाई ॥३॥
साधन ध्यान जपो थिर आसन, लीयो अमर घर लाई।
कहै "सुखराम" शब्द घट जीवत, महिमा अगम दर्शाई ॥४॥

श्री साधु मोडाराम (मुनिदास) जी

उपनाम– मोहनरामजी महाराज कृत भजन

भजन (१) राग श्याम कल्याण पद।

करूँ आरती गणपति देवा,
तन मन शान्ति आनन्द वर देवा ॥टेर॥
पहले सिमरूँ गणपति देवा,
हरो पाप कर भव से खेवा ॥१॥
नाम अगोचर अलख अभेवा,
छपन्न भोग चढाऊँ मेवा ॥२॥
तीन लोक में करे गण सेवा,
ऋद्धि सिद्धि को पूरो थेवा ॥३॥

'मुनिदास" माँगू भक्ति मेवा,
सब देवन का तूँही वर देवा ॥४॥

भजन (२) राग श्याम कल्याण पद ।

आरती कीजे हरि नाम को लीजे,
सांझ पड़ी हरि स्मरण कीजे ॥टेर॥
पहले पांच पचीसूँ वश करीजे,
पीछे मन चित ध्यान धरीजे ॥१॥
सतगुरू सन्त के शरण रहीजे,
दया धर्म गुण हृदय गुणीजे ॥२॥
सत संगत सत प्रेम पतीजे,
सत्य शब्द का प्याला लीजे ॥३॥
"ठारूराम" गुरू ज्ञान गम दीजे,
"मोहन" रमझ समझ रस पीजे ॥४॥

भजन (३) राग श्याम कल्याण पद ।

आरती कीजे सत भाव धरीजे,
सतगुरू संत के शरण रहीजे ॥टेर॥

भवजल में जहाज सत संगा,
सुगरा जन हो पार भव भंगा ॥१॥
तन मन लाय करो नित सेवा,
गुरू गम लखो वेद का मेवा ॥२॥
भक्त भगवान एक कर देखो,
सत शब्द को धर उर लेखो ॥३॥
साधन चार सार कर जाना,
भजन करो चितलाय भगवाना ॥४॥
"मोहनराम" को ओर न भावे,
निर्भय निशिदिन हरि गुण गावे ॥५॥

भजन (४) रागपद - शक्ति प्रार्थना ।

नमो नमो श्री शारद माता,
तेरा यश ऋषि मुनि गण सब गाता ।
तत्व ब्रह्म विद्या की दाता,
पंच विषय हर-सुख की दाता ॥१॥
नमो नमो श्री लक्ष्मी माता,
तेरा गुण ऋषि मुनि गण सब गाता ।

अन्न धन सम्पति सुख की दाता,
दुःख दारिद्र दूर सब थाता ॥२॥
नमो सु आदि भवानी माता,
तेरा गुण ऋषि मुनि संत गण गाता ।
वाहन सिंह निर्भय अरि ढाता,
मद हर सोंह रूप समाता ॥३॥
नमो नमो सती सीता माता,
तेरा गुण ऋषि मुनि वेद गण गाता
जत मत सतकी पूरण दाता,
रावण मार रामरूप समाता ॥४॥
नमो नमो श्री गंगा माता,
तेरा गुण गौरव ऋषि मुनि गाता ।
भागीरथ का भाग्य विधाता,
जनम जनम का पातक जाता ॥५॥
पांचों माता "मोहन" ध्याता,
हरि हर अज के रूप समाता ।

जनम मरण का भव कट जाता,
निर्भय होय परम सुख पाता ॥६॥

भजन (४) राग़ सोहनी पद ।

हरिजी भक्तन भीर मिटाये,
प्रभूजी संतो कारज आये ॥
सब अचरज खेल बनायो,
नहीं किस की समझ में आयो ॥टेर॥
प्रथम विष्णु रूप धर स्वामी,
गरूड़ वाहन चढ धायो ।
सुर दानव ग्रह मार पछाड़यो,
ध्रुव पद अक्षय बनायो ॥१॥
धर वाराह रूप प्रभु गोविन्द,
हिरराय कश्यप मिटायो ।
वेद रक्षा कर पृथ्वी पालन,
भक्तन में यश छायो ॥२॥
नृसिंह रूप धार हरि लीला,
खम्भ फोड़ पायो ।

हिरणाकुश को नखसे मार्यो,
भक्त प्रहलाद बचायो ॥३॥

श्री नारायण अन्तर्यामी,
अर्ध नाम सुण आयो ।
गरुड़ छोड़ ग्रह त्तण में मार्यो,
गज को आनन्द थायो ॥४॥

अग्नि वंश में परशुरामजी,
फरसो कर में लायो ।
इक्कीश वेर त्तत्रीय संहारे,
शूरन कुरू त्तेत्र कहायो ॥५॥

रामचन्द्र सूरजवंशी हो
धनुषबाण कर दायो ।
रावण मार देव फन्द काट्यो,
मर्यादा जग दरसायो ॥६॥

यदूवंशी हो कृष्णचन्द्रजी,
बंशी चक्र कर गायो ।

केश पकड़ कर कंश पछाड़यो,
तीन लोक सुखरायो ॥७॥
कलियुग में कलंकी अब होवे,
अश्व चढे खड्ग घुमायो ।
कलिके पाप काल सब टारे,
सत्य निशान घुरायो ॥८॥
आदि अन्त प्रभु को नहीं आवे,
लीला लोक रिझायो ।
हाथ जोड़ कर करे वीनती,
यूँ "मुनिदास" रट लायो ॥९॥

भजन (६) रागपद संगीत ।

मेरे सतगुरु संत को करूँ वन्दकी,
प्रभू तारे भवसिंधु की फन्दकी ॥टेर॥
गर्भवास में लटकत उँधे कंधकी,
खावत पीवत मल गंधकी ॥१॥
लखचौरासी में भूला भटकत,
जीव रेण दिन अंधकी ॥२॥

अज्ञान अँधारे नर तन खोयो,
क्यों सूझे रवि ज्ञान चन्दकी ।।३।।
मनुष जन्म को अवसर आयो,
समझ चलो जग झूंठकी ।।४।।
अन्त समय तेरो दौड़त आवे,
यम मुग्दर मारे पटकी ।।५।।
गुरूबिन कौन हरे दुःख सारा,
जनम मरण नहीं अन्तकी ।।६।।
"मुनिदास" गुरू गम हरि सिमरे,
देही झूँठ पांच तंतकी ।।७।।

भजन (७) राग आशा पद टोडी ।

मनमेरा ! प्रीत सन्तन की आई ।
शब्दसार हंसो को देवे,
हीरा चूण चुगाई ।।टेर।।
जगत सागर मन भय को दाता,
सुख को दाता नांई ।

अन्त पछुताये क्या तेरे होसी,
यम जबरा दुःखदाई ॥१॥
नाम सायर शुद्ध सुख को दाता,
दुःख को मार मिटाई ।
जनम मरण का शंसय टूटे,
नहीं जम की जबराई ॥२॥
भवसागर है छीलर पाणी,
थोड़ा त्रेह तसाई ।
दीसत परसत अविद्या मांही,
मृग तृष्णा भटकाई ॥३॥
राम कृष्ण सुख आनन्द सिन्धु,
भरिया ब्रह्म अमाई ।
संतन की गम करूणा पूर्ण,
यूँ "मुनिदास" मुक्ताई ॥४॥

भजन (८) राग आशावरी पद टोडी ।

प्रभूजी ! धन धन कृष्ण मुरारी ।

तेरी कला सकल घट पूर्ण,
सो भक्तन हितकारी ॥टेर॥
नाम तेरा सुखदायक जग में,
लीला परम बलधारी ।
भक्त रटे निशि वासर प्यारा,
दुर्जन दुष्ट संहारी ॥१॥
इन्द्र अभिमान कीयो हदभारी,
व्रज पर नीर बहारी ।
अँगुली पर गिरि राज उठायो,
गोकुल कृष्ण उभारी ॥२॥
कंश अनीति तुम से कीनी,
केश पकड़ ता मारी ।
नानाजी को गाद्दी बैठाये,
कोटिक यादव तारी ॥३॥
काली नाग जब शोर मचायो,
फूँक यमुना में फूँमारी ।

चार पहर हरि नटवर बनके,
शिर पर नाच नचारी ॥४॥
कौरव दुर्योधन रार मचाई,
रण में युद्ध खिलारी ।
जीत अर्जुन पाण्डव को दीन्ही,
कौरव सैन मिटारी ॥५॥
कलि विकारी पाप भराडारी,
भक्ति रु ज्ञान बिगारी ।
"मुनिदास" अरदास करत है,
मिलिये कृष्ण गिरधारी ॥६॥

भजन (९) राग काफी (सिंधीभाषा)

कृष्ण वैठी सारयां, डुःख जाडींह गुजारयां.
मां कृष्ण वैठी सारयां ॥टेर॥
कूड़ो कूड़ कथीर दुनिया में,
डिसी थी उमर गुजारयां ॥१॥
विरह जो तीर लगो मुँहिजे दिलमें,
हरदम काँव उडारया ॥२॥

डेई ताला पहिंजे मन्दिर खे,
अन्दर चरखो धारयां ॥३॥
हरदम दम तोखे तार डियामां,
भरे भरे अख्यूँ निहारयां ॥४॥
गोलो गुलाम मुनिदास आहे तुँहिजो,
मुखे तूँही सुख भारयां ॥५॥

भजन (१०) राग काफी (सिंधी भाषा)

सखियूँ मुहिज्यूँ ! गोविन्द गायो,
गोविन्द गाये जन्म सुधारयो ।
सिक लगाये सत कमायो,
कूड़ न गाल्हायो ॥टेर॥
डिसी ख्याल तमासो दुनियाँ में,
छो तँवहीं जी जलायो ॥१॥
डिसी दुनियां जो चालो,
छो पंहिजो चित रूलायो ॥२॥
सुखन जो बाग कूड़ो दुनियाँ में,
पामर घुमन भुलायो ॥३॥

नालो कृष्ण जो सच्चो दुनिया में,
वड़े भाग सां मुँह आयो ॥४॥
कहै "मुनिदास" मुंहिजे हृदे में,
सो रटे रटे सुख पायो ॥५॥

भजन (११) राग सारंग मलार पद झंझोटी ।

प्रेम पीव प्यारी हरिसूँ करयारी,
राम से लग्न लगारी ॥टेर॥
सुण रस वंशी मगन भई मैं,
आठ पहर मन रहत खुमारी ॥१॥
रसना रट नाम. किया हरि दर्शन,
अङ्ग अङ्ग में आनन्द भयारी ॥२॥
गया दुःख दूरा, भया भरपूरा,
भवसागर का कष्ट हटारी ॥३॥
कृपा मोहन की "मोहन" ऊपर,
जनम मरण का फंदकटारी ॥४॥

भजन (१२) राग सारंग मलार पद ।

आज सखी आवो कृष्णमिल गावो,
पावो परम सुख ज्ञान अपारी ॥टेर॥

पांचूरोको मनवश करके,
जगत जंजाल को दूर विसारी ॥१॥
कृष्ण ब्रह्म सत एक अनादी,
रटते होवत आनन्द अधारी ॥२॥
गुरूगम पाया साधन की संगत,
नेम प्रेम संग काट विकारी ॥३॥
"मुनिदास" मौन कर दिलमें,
पावो मुक्ति धाम सुखारी ॥४॥

भजन (१३) राग सारंग, मलार पद ।

राम भज प्यारा होय सुख सारा,
भव सागर को भय कटजासी ॥टेर॥
गुरूकी शरण साध की संगत,
पाय प्रेम उर नेम उपासी ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ को त्यागो,
साधन सार पाय अविनाशी ॥२॥
घट में तीर्थ न्हावो भाई साधो,
ईश्वर जानो घट घट वासी ॥३॥

"मुनिदास" है शरण राम की,
मुक्ति राम की पूर्ण दासी ॥४॥

भजन (१४) राम हेली, राजेश्वरी सोरठ पद ।

हेली ! सुख सायर प्रभू आप है.
सब सुख का भण्डार ॥टेर॥
संकल्प विकल्प मन मान है,
चिंतवन चित चितार ।
मैं "हूं" यह अहंकार है,
यह लख चौरासी धार ॥१॥
नीच कुसंग विकार है,
मन बुद्धि हरत विचार ।
भवसागर जिवड़ा पचे,
पड़े यमों की मार ॥२॥
सत संगत सत सार है,
ज्ञान रू गुण आधार ।
श्रवण मनण शम दमन को,
निदिध्यासन कर सार ॥३॥

"ठारूराम" गुरू रमझदे,
वेद संत निरधार ।
राम नाम निरवाण है,
"मोहन" हो निस्तार ॥४॥

भजन (१५) राग हेली, सोरठ पद दोहा ।

हेली ! उज्वल मन संत हंस बसे,
मान सागर ब्रह्मज्ञान ॥टेर॥
हंस बोली गुण सुहावना,
राम भक्ति कर जान ।
भवसागर का भय मिटे,
मोती नाम निशान ॥१॥
कुमत बुगला संग त्यागदे,
होय भक्ति में हान ।
लख चौरासी जीव पड़े,
भटकत चारो खान ॥२॥
संत चन्दन इक सार है,
बावन बैणा सुज्ञान ।

ताप तीन भव अघ कटे,
तरू जन करत कल्यान ॥३॥
"ठारूराम" गुरू सिंधु है,
मोती चुगावे मान ।
"मोहनराम" हंस कोई जन,
पावे आनन्द परवान ॥४॥

भजन (१६) राग सारंग पद ।

उधोजी ! मुझे आन मिलाओ श्रीराम ।
मैं दर्शन करूँ घनश्याम ॥टेर॥
वंशी की लकड़ी वन बांस में ऊगी,
शिर पर सही हिम धाम ॥१॥
तपस्या तपी हरि मुख लागी ।
कर सूँ तान तमाम ॥२॥
वंशी की राग गोपी सुन दौड़ी ।
भूल गई घर का काम ॥३॥
"मोहनराम" गोविन्द गुण गावो ।
पावो मुक्ति सुख धाम ॥४॥

भजन (१७) राग सोरठ, सारंग पद ।

कानजी की बंशी लागे मुझ प्यारी ।।टेर।।
सुण रस बंशी चित मगन भयारी ।
आठ पहर रह चढी खुमारी ।।१।।
पीया प्रेम प्यालाभया मन मतवाला ।
जनम मरण दुःख दोष गयारी ।।२।।
तेरे कारण प्रभू घर धंधा छोड़या ।
आय मिलो अब कृष्ण मुरारी ।।३।।
"मोहनराम" सखी वर भल पायो ।
सुमति सैज गोविन्द गिरधारी ।।४।।

भजन (१८) राग सारंग पद का ।

राम तेरी भक्ति लागे मुझ मीठी ।।टेर।।
लाज तज सारी भोग जग भारी ।
भव सागर की फाड़ी चीठी ।।१।।
तेरी भक्ति कारण कष्ट से तारण ।
शील शतोष को लीवी मजीठी ।।२।।
प्रभू नाम तेरा काटे दुःख मेरा ।

नरतन दीयो अब हरो अरीठी ॥३॥
तेरी प्रभू कथा सदा सत जथा ।
श्रवण करूँ तज बातों झूँठी ॥४॥
कहै दास पूरा "मोहन" गुण शूरा ।
भक्ति मुक्ति पद देवो अचीठी ॥५॥

भजन (१६) राग सारंग पद ।

नर भजो सारा हरि हर प्यारा ।
भूल दुनिया का फन्दा सारा ॥टेर॥
मात पिता तेरे नारी लड़का ।
भवसागर का भय यह भारा ॥१॥
नरतन हरि यह दीयो अमोलख ।
वृथा खोय मत मूढ गँवारा ॥२॥
हाथ दीया हरि पुराय करने को ।
नैन दीया संत दर्श निहारा ॥३॥
स्वास दियो हरि स्मरण करण को ।
नाक दीयो लज्जा रू विचारा ॥४॥
"मोहनराम" भूल मत हरि को ।

स्वारथ का यह सब संसारा ॥५॥

भजन (२०) राग सारंग पद ।

प्रभू थांरो देश सदा रंग रूड़ो ।
देश सुरंगो सदा रलियाणो ॥टेर॥
थांरो देश रामा फूलों सुख छायो ।
कली कली रंग है निरवाणो ॥१॥
थांरे देश में शान्ति छाई ।
नहीं ताप पाप दुःख दाणो ॥२॥
सब जग देश मोहि खारो लागे ।
हरि रत्न देश आनन्द अपाणो ॥३॥
अमरापुर हरि अमृत रस में ।
अविनाशी संत भक्त सुजाणो ॥४॥
"मोहनराम" तेरे देश का वाशी ।
जनम मरण को भय हरणो ॥५॥

भजन (२१) राग सारग पद ।

रामजी मैं तो थांरी कीरत गाईसां,
प्रभूजी थांरी महिमा गांसा ॥टेर॥

इस जग में माया मद मोहा,
तो दर्शन से सुख पासां ॥१॥
इसी देश में क्रोध की फांसी,
तेरे दश में अविनाशा ॥२॥
इत है जनम मरण का फन्दा,
वहां अमर पद आसां ॥३॥
यहां है चारखाण चौरासी,
उत्त में भव फन्द कटास्यां ॥४॥
"मोहनराम" श्याम की महिमा,
जनम मरण को भय हरास्यां ॥५॥

भजन (२२) राग प्रभाती पद ।

दर्शन दो हरि कृष्ण मुरारी,
मैं बिन दर्शन दुखियारी ॥टेर॥
तुझ कारण बाला गृह काज त्याग्या,
बन बन ढूँढी वृंदावन सारी ॥१॥
तेरे लिये जग खटपट छोड़ी,
कृष्ण भक्ति अति प्यारी ॥२॥
खावण पीवण सोवण भूली, तेरे नाम पर जाऊं बलिहारी ॥३॥
तुझ कारण "डुंगिदास" हरि यश गायो, वेग मिलो गिरधारी ॥४॥

सूर्यनारायण स्तुति (दोहा)

परमदेव पूरव दिशा, ऊगा ब्रह्मवर भाण ॥
उल्लु अज्ञानी भूलिया, आंधा जीव अजाण ॥३॥
चतुर संत सत जाणता, ब्रह्मज्ञान सत सूर ॥
लखिया आतम भरपूर वो, नैनों खुलिया नूर ॥४॥
परम परमातम ऊगिया, पूर्व दिश में भाण ॥
लख्या राम गुरू कृष्ण को, जगमें जीवा जाण ॥५॥
जीवा जूण जागी सभी, हुआ उजाला आय ॥
कीड़ी कण हस्ती मणा, देवे विष्णु धाय ॥६॥
सूर्य देव श्री विष्णु है, जपो जापकर सेव ॥
पाप ताप भवका कटे, पावो केवल भेव ॥७॥

भजन (२३) राग राम गिरि प्रभाती पद ।

हरिराम ! दिनकर मोटा देव है,
महिमा अपरम पारा ।
तम मिटे अज्ञ लोक का,
आप सकल से न्यारा ॥टेर॥
हरिराम ! पूर्व दिश सूरज ऊगियो,
चहूँ दिश भया उज्वारा ।
नैणों सूँ निरखो मेरे भावियो,

उतरे चौरासी का भारा ॥१॥
हरिराम ! बारह मास षट् ऋतु में,
चार पहर इक धारा ।
पूर्व पश्चिम गम अगम भवे,
करे राज व्यवहारा ॥२॥
हरिराम ! चन्द्रमा अन्न अमृत करे,
विष्णु ज्योति सुधारा ।
ब्रह्मकला हुआ रवि साक्षी,
रघुवर पोषण हारा ॥३॥
हरिराम ! सात द्वीप नव खण्ड में,
चेतन है निस्तारा ।
"मुनिदास" सच्चिदानन्द सोहं,
आत्म ब्रह्म पसारा ॥४॥

भजन (२४) राग रामगिरि प्रभाती पद ।

हरिराम ! प्राण आधार मेरे राम है, दूजा नहीं भावे ।
हरदम दम स्मरण करूं, तूं ही हरि तूं ही को गावे ॥टेर॥
हरिराम ! आत्मराम अविनाश है, अजर अमरावे ।

ओमकार तकिया भया, हरि साक्षी थावे ॥१॥
हरिराम ! आतमराम अपार है, महिमा अनंतावे ।
नारद शारद गावे नागा, सुरमुनि पार न पावे ॥२॥
हरिराम ! आतमराम मेरा जीव है, ओम सोहं आवे ।
चौदह भवन को राजवी, अविगत रघुवर छावे ॥३॥
हरिराम ! आतमज्ञान रवि ऊगिया, ब्रह्म ज्योति दरसावे ।
अचल अखराड अपार है, मुनिदास निज में समावे ॥४॥

भजन (२४) राग मंगल प्यारी पद अरिल्ल ।

प्यारीए ! राम शरण में जाय, राम गुण गाईये ।
स्मरण मीठा नाम, जासे लिव लाईये ॥१॥
प्यारीए ! जग सुख खारा काम, सो विसराईये ।
अपना परमार्थ शोद्ध, सोहं पद पाईये ॥२॥
प्यारीए ! राम भक्ति गुण खान, परम सुख दाईये ।
जीवन मुक्त हो जाय, फेर नहिं आईये ॥३॥
प्यारीए ! "ठारूराम" गुरू ज्ञान, वेद गम ताईये ।
"मोहनराम" लख आप, उलट समाईये ॥४॥

संत रामप्रकाशाचार्य वैष्णव कृत वाणी सुधा

भजन (१) राग आशावरी पद ।

साधो भाई ! सो सुख परम अनादू ।
शैष शारदा वरण सके नहिं, ब्रह्मानन्द अप्रमादू ॥टेर॥
पांच न तीन प्रपंच क्लेशा, नहीं जहां वाद बिवादू ।
सगुंण निगुंण का शंसय टूटा, नहीं कोई और संवादू ॥१॥
ईश्वर जीव अज्ञान अविद्या, नहीं माया का जादू ।
बन्ध रू मोक्ष पण्डित नहीं मूर्ख, नहीं गृही नहीं सादू ॥२॥
मन बुद्धि विषय वाणी ना पहुँचे, गो गोचर नहीं पादु ।
दृष्ठी सृष्ठी बिन शुन धुन हीना, पावे विरला हरि दादू ॥३॥
"उत्तमराम" अगोचर पूर्ण, नहीं कल्पित पन्थवादू ।
"रामप्रकाश" सोई निज चेतन, अपना स्वरूप है आदू ॥४॥

भजन (२) राग आशावरी पद ।

साधो भाई ! मैं हूँ आप अबाणी ।
अखण्ड अनामी हूँ निरवाणी, निरवाणी निरवाणी ॥टेर॥
मेरा खेल त्रिगुण मय सारा, सबका दृष्टा जाणी ।
सदा अगोचर केवल पूर्ण, पाय सके नहीं बाणी ॥१॥
अक्रिय परमात्म हूँ सच्चिदानन्द, नहीं लाभ नहीं हाणी ।
बन्ध न मोक्ष योग नहीं भोगी, नहीं चौरासी खाणी ॥२॥
लोक प्रलोक गृह भ्रम वासा, जरा मरण नहीं घाणी ।
आप गमाया आप भुलाया, अपना आप पिछाणी ॥३॥
मात रू तात गुरू नहीं चेला, सबही फन्द विलाणी ।
"रामप्रकाश" अटल शुद्ध चेतन, नहीं कोई खैचाताणी ॥४॥

भजन (३) राग आशावरी पद

साधो भाई ! गुरू गम सत संग पाई ।
उत्तमराम की युक्ति पूर्ण, रमझ समझ उर लाई ॥टेर॥
काट विकार कामादिक मदको, अविद्या मार मिटाई ।
माया जीव ईश ब्रह्म भिन्नता, शंसय सर्व विलाई ॥१॥
ज्ञान ध्यान वर निश्चय उरमें, साधन सर्व सजाई ।
द्वंद असार त्याग सब भ्रान्ति, पन्थवाद तज काई ॥२॥
निर्भय डंका बाजत बंका, राव रंक तज खाई ।
सदा निशंक निजात्म पूर्ण, अपना आप ठहराई ॥३॥
सतगुरू स्वामी उत्तम ब्रह्मवेता, धन गुरु खोज लखाई ।
"रामप्रकाश" अप्रोक्ष दृढात्म, प्रकट अनुभव गाई ॥४॥

भजन (४) राग सोरठ पद

फकीरी ! सत संगत ततसार ।
राव रंक श्रधाकर आवे, सबका होय उधार ॥टेर॥
ब्रह्मज्ञानी सत शब्द सुनावे, अनुभव ज्ञान उचार ।
कर्म उपासन ज्ञान मारूत ते, भ्रम उड़ावे छार ॥१॥
कर्म कलंक विक्षेप मिटावे, आवर्ण भेद विडार ।
अधमी पामर जीव जगत में, सबका करे सुधार ॥२॥
बाल वृद्ध तरूण हो कोई, चाहै नर हो नार ।

सत गुरू शरण साधन की कृपा, कर पुरूषार्थ सार ॥३॥
भव से पार विकार विडारे, तुरंत होय निस्तार।
"रामप्रकाश" सत असल फकीरो, लख शुद्ध ब्रह्म अपार ॥४॥

भजन (५) राग सोरठ पद

फकीरी ! ब्रह्मज्ञानी मस्तान।
हर्ष शोक जीत मन बाजी, प्रपंच रहित निरवान ॥टेर॥
कबहूँ खीर पुरी भोजन को, कबहूँ करे जल पान।
कबहूँ चना चबीना पावे, अपनी मौज गलतान ॥१॥
कबहूँ शाल कभी बाघम्बर, कबहूँ दिगम्बर ध्यान।
कबहूं मौन कबहूँ कुछ बोले, उपदेशक प्रधान ॥२॥
कबहूँ महल शहर वन मठ में, नदी तीर सुख खान।
कबहूँ कथे कथनी चुप साधन, काटया द्वैत अज्ञान ॥३॥
कर्म करे नित शुभ अनाशक्त, प्रारब्ध वर्ते जान।
"रामप्रकाश" संत वैष्णव रत्न सो, फकर लख्या ब्रह्मज्ञान ॥४॥

* कुण्डलिया छन्द *

ज्ञान के साधन अष्ट है, धारे संत सुजान।
विवेक वैराग्य शमादि लो, षट् सम्पत्ति परमान ॥
षट् सम्पति परमान, मुमुक्षु होय जियासा।
गुरु मुख श्रवण मनन कर, निदिध्यासन करवासा ॥
ततपद त्वंपद शोद्ध उर, असिपद साक्षी मान।
"रामप्रकाश" दृढ मुक्त शुद्ध, सोहं आत्मज्ञान ॥१॥

भारत के प्रशिद्ध साहित्यकार समालोचकों द्वारा प्रशंसित !

राजस्थान शिक्षा विभाग एवं राज्य समाजकल्याणविभाग से ग्राम वाचनालयों, पुस्तकालयों, समस्त होस्टलों, संस्कार केन्द्रों तथा ब्याज कल्बों आदि के लिये स्वीकृत भक्ति, ज्ञान, नीति, सदाचारादि अलङ्कारों से भरपूर आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, उन्नति दायक साहित्य मंगवाईये ।

१.	श्री भक्ति–पद्य–रसायन	मूल्य	०·५०
२.	नशा–खण्डन–दर्पण	,,	१·५०
३.	श्री आदर्श शिक्षा (एकांकी)	,,	०·५०
४.	श्री उत्तमराम–भजन–प्रकाश	,,	२·००
५.	श्री अवधूत–ज्ञान–चिंतामणि	,,	०.५०
६.	श्री भजन सरोवर–वाणी सरोज	,,	०·६२
७.	श्री दम्पति धर्मोपदेश प्रकाश	,,	०·२५

प्रतीक्षा कीजिये ! साहित्य प्रकाशन में आर्थिक सहयोग दीजिये !!

१. श्री रामप्रकाश–भजन–प्रभाकर (तीन भागों में विभाजित)
२. श्री त्रिकाल रहस्य–विश्व उपक्रमोऽपसंहार
३. श्री रतनमाल चिंतामणी (प्रश्नोत्तरावलि)

पुस्तकों के मिलने के स्थायी पते :–

१ श्री उत्तम आश्रम (वैष्णव निकेतन) कागारोड़, जोधपुर (राजस्थान)
२. साधु मोडारामजी, श्री भक्त आश्रम, पोस्ट गढड़ा (बाड़मेर) राजस्थान
३. श्री मौज आश्रम, पोस्ट चककालियां (श्री गंगानगर) राजस्थान
४. नन्दकिशोर भीखारामजी इणखिया मेघ, पो० गढड़ा (बाड़मेर) राज०
५. किताबघर सोजतीद्वार, जोधपुर (राजस्थान)
६. राजूराम, नारायणदास पो० खर्ला त० श्रीकरणपुर (जिला श्रीगंगानगर) राज०

श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस, सोजती द्वार, जोधपुर ।